# محمّد رسول الله صلى الله عليه وسلم

# मामूलात और मामलात

eBook

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

# मामूलात और मामलात

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नाम किताव ------------- محمد رسول الله मामूलात और मामलात

तालीफ़ ------------- डाकटर फ़रहत हाशमी

नाशिर ------------- आलहुदा पवलीकेशनज़

एडीशन ------------- 8th

ताआदाद ------------- 5000

तारीख़ इशाआत ---------- 2015 November

क़ीमत ------------


## मिलने के पते


**India**

AlHuda Welfare Trust India,Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+91-9535612224 +918040924255.
alhuda.india@gmail.com
www.farhathashmi.com

**America**

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

**Canada**

5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

**England**

14 Wangey Road Chadwell Heath
Essex RM6 4AJ London UK
+44-20-8599-5277 +44-78-8979-0369
alhudaproducts.uk@gmail.com


© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ اَحۡسَنُ مِنۡکَ لَمۡ تَرَقَطُّ عَیۡنِیۡ
وَ اَجۡمَلُ مِنۡکَ لَمۡ تَلَدِ النِّسَاءُ

خُلِقۡتَ مُبَرَّاً مِّنۡ کُلِّ عَیۡبٍ
کَاَنَّکَ قَدۡ خُلِقۡتَ کَمَا تَشَاءُ

(हस्सान बिन साबितؓ)

आपﷺ से हसीन मेरी आंखों ने कभी कोई देखा ही नहीं,और ﷺ स
हसीन व जमील किसी औरत ने कोई जनम ही नहीं दिया,आप   हर ऐब से
पाक पैदा हुए गोया कि आप....को ऐसा बनाया गया जैसा
कि आप...ख़ुद चाहते थे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# فہرست


| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 1 | ज़िक्रे इलाही | 8 |
| 2 | नमाज़ | 9 |
| 3 | रोज़ा | 10 |
| 4 | रमज़ान | 10 |
| 5 | ईदैन | 11 |
| 6 | ख़ुतबा | 11 |
| 7 | सदक़ा व ख़ैरात | 12 |
| 8 | रोज़ मराह के काम | 13 |
| 9 | तहारत व नज़ाफ़त | 13 |
| 10 | खाना-पीना | 14 |
| 11 | सोना जागना | 15 |
| 12 | चाल ढाल | 15 |
| 13 | लिबास | 16 |
| 14 | सफ़र व सवारी | 16 |
| 15 | मुलाक़ात | 17 |
| 16 | मजलिस | 17 |
| 17 | कलाम | 18 |
| 18 | ख़ुशी व नाराज़गी | 19 |
| 19 | अख़लाक़ | 20 |
| 20 | अज़वाजे मुताहरात से बरताव | 22 |
| 21 | बच्चों से ताल्लुक़ | 23 |
| 22 | साथियों के साथ | 24 |
| 23 | मिसकीनों के साथ,साइलों के साथ | 26 |
| 24 | जानवरों के साथ,दरख़्तों के साथ | 27 |


© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# इब्तिदाइया

ये किताब्चा दावाह अकेडमी, इंटरनेशनल इस्लामी यूनिवरसिटी, इस्लामाबाद के तहत मुनअक़िद होने वाली क़ौमी सीरत कॉन्फ़्रेन्स 2010 में पढ़े जाने वाले मक़ाले पर आधारित है.इस मक़ाले का मक़सद नबी अकरम ﷺ के मअमूलात और मुआमलात को आम फ़हम अंदाज़ में पेश करना है ताकि इनकी रौशनी में अपनी रोज़ मर्राह ज़िन्दगी का जाय्ज़ा लिया जा सके.अल्लाह तआला हमें हयाते तय्यबा की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

फ़रमाए...

आमीन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

اَمَّا بَعد

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مُحَمَّدٌّ بْنُ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَبْدِ الْمطلبِ الهَاشِمِيّ القُرَشِيِّ،

- आला नसब,आला हसब,
- क़ौम अशरफ़,क़बीला अशरफ़,ख़ान्दान अशरफ़,

| | |
|---|---|
| • اَحْمَدُ | • सबसे ज़्यादा क़ाबिले तारीफ़, |
| • اَجْوَدُالنَّاس | • सबसे ज़्यादा सख़ी, |
| • اَشْجَعُ النَّاس | • सबसे ज़्यादा बहादुर, |
| • اَزْهَدُالنَّاس | • सबसे बढ़कर दुनिया से बेरग़बत, |
| • اَرْحَمُ النَّاس | • सबसे ज़्यादा मेहरबान, |
| • اَحْسَنُ النَّاس وَجْهًا | • सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत चहरे वाले, |
| • اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا | • सबसे बेहतरीन अख़लाक़ के हामिल, |
| • رَقِيْقًا رَحِيْمًا | • निहायत रक़ीक़ुल क़ल्ब रहीमुल मिज़ाज, |
| • رَفِيْقًا رَحِيْمًا | • निहायत मेहरबान दोस्त, |
| • رَؤُفًا رَحِيْمًا | • बहुत शफ़ीक़ मेहरबान, |
| • سِرَاجًا مُنِيْرًا | • रौशन चिराग़, |

- خَاتَمُ النَّبِيِّنَ اور رَحْمَةً لِلْعَالَمِيْن

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हम आप ﷺपर ईमान का इक़रार करते हैं,आप ﷺसे मुहब्बत का इज़्हार करते हैं,आप ﷺसे अक़ीदत का दावा करते हैं,आप ﷺ से निस्बत पर फ़ख़र करते हैं,आप ﷺ पर दरूद और सलाम भेजते हैं. लेकिन ज़रा रुक कर सोचें.........

क्या हमारा ईमान,अख़लाक़, तर्ज़े अमल,इबादात,मअमूलात और मुआमलात अपनी महबूब हस्ती के उसवये हस्ना के मुताबिक़ हैं?

- हम जहाँ कहीं भी हों घर के अँदर या बाहर,मुसलमानों के दर्मियाँ या ग़ैर मुस्लिमों में,अपने मुल्क में या दुनियाँ के किसी भी ख़ित्ते में क्या हम मुहम्मद ﷺ के उम्मती के तौर पर पहचाने जाते हैं?
- हम ख़ुद से पूछें क्या हम आप ﷺ से मुहब्बत का हक़ अदा करते हैं? क्यों के जो शख़्स जिस्से मुहब्बत का दावा करता है वो उसकी इताअत करता है,उसकी बात मानता है,और उसकी पैरवी करता है,किसी अरब शायर ने कहा:

تَعۡصِی الرَّسُوۡلَ وَاَنۡتَ تُظۡهِرُ حُبَّهٗ          هٰذَا لَعَمۡرِی فِی الزَّمَانِ بَدِیۡعُ
لَوۡ کَانَ حُبُّکَ صَادِقًا لَا طَعۡتَهٗ          اِنَّ الۡمُحِبَّ لِمَنۡ یُّحِبُّ مُطِیۡعُ

"तुम रसूल ﷺ की नाफ़रमानी करते हो-और उसके बावजूद उनसे मुहब्बत का दावा भी करते हो,मेरी उम्र की क़सम ये तो ज़माने में निराली ही बात है,अग र तुम अपनी मुहब्बत में सच्चे होते तो उनकी इताअत करते इस लिए कि सच्चा मुहिब अपने महबूब की इताअत करता है". आज आपके सामने रसूल अल्लाﷺके मअमूलात और मुआमलात को इज्माली तौर पर बयान करुंगी ताकि इनकी रौशनी में हम अपने आमाल का जाय्ज़ा लेते हुए अपनी ज़िंदगी को आप ﷺके तरीक़ए ज़िंदगी के मुताबिक़ ढाल सकें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ज़िकरे इलाही

- अल्लाह के रसूल ﷺ कसरत से ज़िक्रे इलाही किया करते थे.

كَانَ يَذْكُرُ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ اَحْيَانِه

- आप ﷺ हर वक़्त अल्लाह को याद किया करते और कसरत से तस्बीह और इस्तग़फार करते.

كَانَ يُكْثِرُ مِنْ قَوْلِ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيه

एक दिन में सत्तर से सौ बार इस्तग़फार करते.

- जब किसी बात पर ग़मगीन या फ़िक्र मंद होते तो

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ पढ़ कर अल्लाह से फ़रयाद करते.

जब परेशानी होती तो केहते

هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

"अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता."

- छोटी छोटी बातों पर इज़हारे शुक्र फ़रमाते.
- जब ख़ुश होते तो फ़रमाते اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَات

"अल्लाह का शुक्र जिसके फ़ज़ल से नेअमतें इत्माम को पहूंचती हैं."

- जब कोई नापसंदीदा सूरते हाल पेश आती तो भी अल्लाह का शुक्र अदा करते और फ़रमाते.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى كُلِّ حَال "अल्लाह का शुक्र हर हाल में."

- ख़ुद या घर वालों को कोई तकलीफ़ पंहुचती तो معوّذات पढ़ कर दम करते.

गोया ख़ुशी हो या ग़म हर हाल में और हर मौक़े पर अल्लाह ही का ज़िक्र करते.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# नमाज़

- اِذَا حَزَبَهُ اَمْرٌ فَزَعَ اِلَى الصَّلٰوةِ

"जब भी कोई मुआमला पेश आता नमाज़ की तरफ़ जल्दी करते."

- كَانَ يُصَلِّى الصَّلٰوةَ لِوَقْتِهَا "नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ते"

- كَانَ يُصَلِّى لَيْلًا طَوِيْلًا قَائِمًا "रात का एक तवील हिस्सा क़ियाम करते."

- दौराने क़ियाम क़ुरआन मजीद की क़िरअत तरतील के साथ करते जहां लम्बा करना होता लम्बा करते.हर आयत पर रुकते,आयात रेहमत पर रुक कर अल्लाह से रेहमत का सवाल करते,आयात अज़ाब पर रुक कर पनाह मांगते.
- इतनी इबादत करते के पैर सूज जाते और अगर कोई इस्तफ़्सार करता तो फ़रमाते क्या मैं अल्लाह का शुक्र गुज़ार बंदा  ना बनूं.
- लोगों को हल्की नमाज़ पढ़ाते. इस दौरान अगर बच्चे के रोने की आवाज़ आती तो नमाज़ मुख़्तसर कर देते.
- जब बीमार होते तो बैठ कर नमाज़ पढ़ते.
- सफ़र में नमाज़ क़सर अदा करते.दिन चढ़ने पर नमाज़ चाश्त पढ़ते.
- लड़ाई में फ़तह होती या कोई ख़ुशी नसीब होती तो फ़ौरन सजदा करते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# रोज़ा

- रमज़ान के इलावा शाबान में कसरत से रोज़े रखते.
- दूसरे महीनों में कभी लगातार रोज़े रखते ऐसा ख़्याल होता के अब ना छोड़ेंगे,कभी छोड़ देते तो लगता के अब ना रखेंगे.
- हर क़मरी महीने की 13,14,15 तारीख़ ,पीर,जुमेरात,मुहर्रम में यौम आशूरह और अशराए जुल हज के रोज़े रखते.
- शव्वाल के 6 रोज़ों का भी एहतमाम फ़रमाते.
- रोज़ा अक्सर ख़जूर से अफ़तार करते.

# रमज़ान

- माहे रमज़ान में नेकियों में बहुत बढ़जाते ख़ास तौर पर सदक़ा और ख़ैरात करने में तेज़ आंधी से भी ज़्यादा बढ़ जाते.
- जिब्रील (अ) के साथ क़ुरआन मजीद का दौर करते.

اِذَادَخَلَ الْعَشْرُ اَحْيَا اللَّيْلَ وَاَيْقَظَ اَهْلَهُ وَجَدَّ وَشَدَّ الْمِئْزَرَ

"जूंही रमज़ान का आख़री अशरह शुरू होता आप ﷺ ख़ुद भी जागते और अपने घर वालों को भी जगाते,ख़ूब मेहनत करते और कमर कस लेते."

- हर साल ऐताकाफ़ करते. आप ﷺ के हर काम में दवाम होता.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ईदैन

- ईदैन पर ख़ास एहतमाम फ़रमाते,ग़ुस्ल करते ,बेहतरीन लिबास पहनते.
- ईद के लिए पैदल आते और जाते.
- ख़्वातीन को भी ईद गाह जाने का हुक्म देते.
- ईदुल फ़ित्र के दिन मीठी चीज़ खा कर नमाज़ ईद के लिए जाते.
- ईदुल अधा के मौक़े पर हर साल क़ुर्बानी करते.

# ख़ुत्बा

- ख़ुत्बा हमेशा हम्दो सना से करते और इस में क़ुरआन मजीद की आयात पढ़ते.
- ख़ुत्बा कभी ज़मीन पर खड़े होकर,कभी मिम्बर पर ,कभी खजूर के तने पर,कभी ऊंठ की पुश्त पर बैठ कर देते.
- ख़ुत्बे के वक़्त आंखें सुर्ख़ हो जातीं और आवाज़ बुलंद हो जाती.
- ऐसे इल्म से पनाह मांगते जो फ़ायदा ना दे.

© AL-HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# सदक़ा व ख़ैरात

- ख़ुद भी सदक़ा करते और दूसरों को भी सदक़ा करने का हुक्म देते.
- कोई चीज़ कल के लिए बचाकर ना रखते.
- कोई सदक़ा लेकर आता तो उसको दुआ देते.
- किसी साइल को इंकार ना करते.अगर पास कुछ ना होता तो ख़ामोशी इख़्तियार करते.
- किसी को हदिया कह कर देते,किसी को कुछ हिबा कर देते.
- ख़रीदो फ़रोख़्त में कभी ज़्यादा अदाएगी करते,क़र्ज़ लेते तो ज़्यादा लौटाते.
- माल का ज़िया और इसराफ़ बिल्कुल पसंद ना था.

आज ज़रूरत है कि हम अपने ख़र्च के अंदाज़ को देखें.अपने लिबास, अपने रहन सहन और अपनी रोज़ मर्रह ज़िंदगी में जहां जहां और जितना माल हम ख़र्च करते हैं उस पर भी ग़ौर करें.

हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है:

مَاسُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَيئًا قَطُّ فَقَالَ : لَا [متفق عليه]

एसा कभी ना हुआ के रसूल ﷺ से किसी चीज़ का सवाल किया गया हो और आप ﷺ ने जवाब में "नहीं" फ़रमाया हो.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# रोज़ मर्रह के काम

- घर वालों की ख़िदमत करने को ऐब ना समझते.
- وَ يَخْصِفُ النَّعْلَ "जूता सी लेते."
- चर्मी डोल को भी पैवंद लगा लेते.
- يَرْقَعُ الثَّوْبَ وَيَخِيطُ "अपने कपड़ों पर पैवंद लगा लेते और सी लेते."
- अपने हाथ से बकरी का दूध दोह लेते.
- कपड़ों से जुऐं निकाल लेते.

यानी वो काम जिनका करना उमूमन पसंदीदा नहीं समझा जाता आप ﷺ इन्हें अपनी शान के ख़िलाफ़ नहीं समझते थे.

# तहारत व नज़ाफ़त

- ज़ाती सफ़ाई और सुथराई का ख़ास ख़्याल रखते ख़ुसूसन मुंह की सफ़ाई का.
- إِذَا اسْتَيْقَظَ بَدَأَ بِالسِّوَاكِ "जब सुब्ह सोकर उठते तो सबसे पहले मिस्वाक करते."
- إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ بَدَأَ بِالسِّوَاكِ "घर दाख़िल होते तो पहला काम मिस्वाक करना होता."
- لَا يَنَامُ إِلَّا السِّوَاكُ عِنْدَهُ "सोते वक़्त भी मिस्वाक आप ﷺ के पास होता."यानी रात को आख़री काम यही करते.
- हर नमाज़ के लिए अलग वुज़ू करते,वुज़ू की शुरुआत بسم الله से करते, कभी एक ही वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ लेते.
- वुज़ू में पानी के इसराफ़ से बचते अगरचे आज़ा पूरी तरह धोते और कोई हिस्सा सूखा ना छोड़ते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# खाना पीना

- खाना بِسْمِ اللّٰه पढ़कर शुरू करते.
- दाऐं हाथ से खाते,अपने सामने से खाते.
- तीन उंगलियों से खाते,खाने के बाद उंगलियां चाट लेते.
- खाना खाते हुए टेक ना लगाते.
- كَانَ يَجْلِسُ عَلَى الْاَرْضِ وَ يَأْكُلُ عَلَى الْاَرْض

  "ज़मीन पर बैठते और ज़मीन पर खाते थे."
- كانَ لَا يَأْكُلُ شَيْئًا حَتّٰى يَعْلَمَ مَا هُوَ

  "कोई चीज़ उस वक़्त तक ना खाते जब तक जान ना लेते के वो क्या चीज़ है."
- किसी खाने में ऐब ना निकालते
- खाने के बाद اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहते.
- كَانَ يُحِبُّ الزَّبَدَ وَالتَّمر “मख्खन और खजूर पसंद फ़रमाते."
- يُحِبُّ الْحَلْوَاءَ وَ الْعَسَلَ “हलवा और शहद पसंद करते थे."
- كَانَ يَكْرَهُ شُرْبَ الْحَمِيْمِ “सख़्त गर्म मशरूब पसंद ना करते."
- كَانَ اَحَبُّ الشَّرَابِ اِلَيْهِ الْحُلْوَ الْبَارِدَ

  "पीने में ठंडी और मीठी चीज़ आप ﷺ को सबसे ज़्यादा पसंद थी."
- पानी दाऐं हाथ से तीन सांस में पीते.
- खाने में दूसरों को शरीक करना पसंद करते.हज़रत अनस ﷺ से फ़रमाते

  “अनस! देखो अगर कोई है जो मेरे साथ खाने में शरीक हो जाए."

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# सोना जागना

- कभी बिस्तर पर सोते,कभी ज़मीन पर.
- चमड़े का बिस्तर और तकिया इस्तेमाल करते जिस में खजूर की छाल भरी होती.
- इशा से पहले सोना पसंद ना करते.
- रात सोने से पहले सुरमा लगाते.
- दाऐं करवट लेटते.
- दुआ पढ़कर सोते और दुआ पढ़ते हुए जागते.

# चाल ढाल

- आप ﷺ की चाल बा वक़ार और पुर सुकून थी.
- اِذَا مَشٰی لَمْ یَلْتَفِتْ "चलते हुए पीछे मुड़ कर ना देखते."
- सीधा चलते और यूं लगता जैसे ज़मीन सामने से तह हो रही हो या आप ﷺ पहाड़ी की ढलवान से उतर रहे हों.
- कभी जूता पहनकर और कभी नंगे पांव भी चलते.
- ये बात ना पसंद थी के कोई आप ﷺ के पीछे चले.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# लिबास

- जिस क़िस्म का कपड़ा मिलता पहन लेते. सूती,कतानी,ऊनी, बेहतर से बेहतर और पैवंद लगा लिबास भी पहन लेते.
- आम तौर पर हरा रंग पसंद था.
- कुर्ता पसंदीदा लिबास था.पूरी आसतीन पहनते.
- अमामा कभी टोपी के साथ और कभी बग़ैर टोपी के इस्तेमाल फ़रमाते.
- चांदी की अंगूठी पहनते.
- ग़ुरूर व तकब्बुर और शोहरत के लिबास की मुज़म्मत (निंदा) फ़रमाते. मर्दों को रेशम पहनने से मना करते.

# सफ़र व सवारी

- घोड़े,ऊंट,ख़च्चर और गधे सब पर सवारी कर लेते.
- कभी ज़ीन के साथ कभी नंगी पीठ पर.
- कभी आगे या पीछे किसी और को भी साथ बिठा लेते.
- अक्सर सवारी पर नफ़िल नमाज़ अदा कर लेते.
- जुमेरात के दिन सफ़र करना पसंद करते.
- सफ़र से वापसी पर آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْن कहते और घर जाने से पहले मस्जिद में दो रकअत नफ़िल अदा करते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मुलाक़ात

- मुलाक़ात के मौक़े पर सलाम में पहल करते,मुसाफिहा करते,जब तक दूसरा शख़्स हाथ ना छोड़ता आपﷺ भी ना छोड़ते.
- सलाम का जवाब ज़बान से देते.
- मुलाक़ात के वक़्त बात ध्यान से सुनते,पूरे जिस्म के साथ दूसरे कि तरफ़ मुतावज्जे होते.

# मजलिस

- किसी मजलिस में जाते तो जहां जगह मिलती बैठ जाते.
- जब आपﷺ किसी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा होते तो जिस बात पर लोग ताअज्जुब करते आप भी ताअज्जुब करते.
- मजलिस में जब कोई हंसता तो आपﷺ भी मुस्कुराते.
- कोई बाहर का आदमी सख़्त बात करता या बेबाकी से काम लेता तो तहम्मुल से काम लेते और सख़्त जवाब ना देते.
- एहसान का बदला देने वाले के सिवा किसी की तारीफ़ पसंद ना करते . नीज़ तारीफ़ में मुबालग़ा आराई भी ना पसंद थी
- छींक आने पर आवाज़ आहिस्ता करते और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहते.
- छींकते वक़्त चेहरे को हाथ या कपड़े से ढांप लेते.
- कोई और छींकता तो يَرْحَمُکَ اللّٰه कह कर जवाब देते.
- जमाई के वक़्त भी हाथ मुंह के आगे करते या जमाई को रोक लेते.
- मजलिस के इख़्तिताम पर अल्लाह का ज़िक्र करते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# कलाम

- كَانَ يُكْثِرُ الذِّكْرَ وَيُقِلُّ اللغو "आपﷺ कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाले थे और आप ﷺ के कलाम में बेहुदा और बेकार बातें ना होती थीं".
- आप ﷺ का कलाम वाज़ेह होता था.
- اِذَا تَكَلَّمَ تَكَلَّمَ ثَلاَثًا "बात को तीन बार दोहराते."
  समझाने के लिए ठहर ठहर कर बोलते के सुन्ने वाला पूरी तरह बात समझ जाता.
- ऐसी बात करते के अगर कोई गिन्ना चाहता तो गिन सकता था.
- ज़बान से جوامع الكَلِم अदा होते यानी नपे तुले शब्द,ना कम ना ज़्यादा.
- आपﷺको बहुत ज़्यादा सवाल और قِيْلَ व وَقَال ("कहा गया और उसने कहा she said,he said")पसंद ना था.
- बात चीत में ना किसी की ग़ीबत होती ना ताना ज़नी.
- किसी की ऐब जोई ना करते,किसी की अंदरूनी बातों की टोह में ना रहते.
- वही बात करते जिस से कोई मुफ़ीद नतीजा निकल सकता था.

मगर आज हमारी अकसरियत का हाल इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है कि अपनी कोई फ़िक्र नहीं,ज़्यादा बातें दूसरों के गिर्द घूमती हैं,दूसरों की ज़ात पर ज़्यादा ध्यान होता है और दुनिया भर के हालात और वाक़ियात पर चर्चा और बहस व मुबाहिसे ज़्यादा होते हैं.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ख़ुशी व नाराज़गी

- كَانَ طَوِيلُ الصَّمْتِ وَقَلِيلُ الضِّحْكِ۔ "ज़्यादा ख़ामोश रहते और कम हंसते"
- बहुत ख़ुश मिज़ाज थे,ख़ुश होते तो चेहरा मुबारक चमक उठता गोया चौधवीं का चांद हो.
- जब नाराज़ होते तो चेहरे पर नाराज़गी का इज़्हार होता.गोया जो दिल के अंदर था वही बाहर था.
- ना ख़ुशी में क़हक़हे ना रोने में चीख़ व पुकार,बस आंखें नम होती थीं.
- हज़रत जरीर رضي الله عنه कहते हैं कि:"आप ﷺने कभी मुझे अपने पास आने से नहीं रोका और कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने आपﷺ को देखा हो आपﷺ मुस्कुराए ना हों".
- जब किसी से नाराज़ होते तो ज़्यादा से ज़्यादा ये कहते مَالَهُ تَرِبَتْ جَبِيْنُه "इसे क्या हुआ ,इसकी पेशानी ख़ाक आलूद हो".
- एक दफ़ा घर तशरीफ़ लाए तो देखा घर में तस्वीर वाला पर्दा लटक रहा है आप ﷺने नागवारी का इज़्हार किया और हज़रत आइशा رضي الله عنه से फ़रमाया" इसको तब्दील करदो".

सब के लिए **लमह** फ़िक्रिया ये है के आज हमारे घरों की सजावट किन चीज़ों से हो रही है?

हज़रत अबु सईद ﷺ से रिवायत है:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِيْ خِدْرِهَا فَإِذَا رَأى شَيْئًا يَكْرَهُهُ عَرَفْنَاهُ فِيْ وَجْهِهٖ (صحيح البخارى)

नबी करीमﷺ पर्दे में रहने वाली कंवारी लड़की से भी ज़्यादा हया वाले थे,जब आपﷺ कोई ऐसी चीज़ देखते जो आपको नागवार होती तो हम आपﷺ के चेहरा मुबारक से समझ जाते थे.



© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अख़्लाक़

- आपﷺ का अख़्लाक़ सरापा क़ुरआन था.
- हमेशा सच बोलते झूठ से नफ़रत करते.
- वादे की पाबंदी करते.हक़ की हिमायत करते.
- दयानतदारी का ये आलम था के दुशमन भी सादिक़ और अमीन कह कर पुकारते.
- बहुत बहादुर और निडर थे.
- मुश्किलात और मसाइब में सब्र करने वाले थे.
- बा पर्दा कुंवारी लड़की से ज़्यादा हया दार थे.
- जो आपﷺ को देखता मरऊब हो जाता लेकिन जैसे जैसे आशना होता जाता आपﷺ से मुहब्बत करने लगता.
- हिंद رضي الله عنه बिन अबी हाला कहते हैं:आपﷺ नर्म ख़ू थे,सख़्त मिज़ाज ना थे,दुनिया और उसकी चीज़ें ग़ुस्सा ना दिला सकती थीं हां अगर कोई हक़ की मुख़ालिफ़त करता तो ग़ुस्सा करते और हक़ की हिमायत करते लेकिन ज़ाती मुआमले में ना कभी ग़ुस्सा किया और ना बदला लिया.
- तौरात में है لَيْسَ بِفَظٍّ وَلَا غَلِيْظٍ وَلَاسَخَّابٍ بِالْاَسْوَاقِ

  "आप ﷺ सख़्त कलाम ना थे,ना संग दिल और ना बाज़ारों में शोर करने वाले थे".

  जब के आज मसाइल के हल के लिए बाज़ारों में शोर,हंगामा और नारे बाज़ी आम है.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

- निहायत बुरदुबार और मुतहम्मिल थे.
- لَا يَدْفَعُ السَّيِّئَةَ بِالسَّيِّئَةِ
"बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे".
- وَلٰكِنْ يَعْفُو وَيَصْفَحُ
“लेकिन आप ﷺ माफ़ फ़रमा देते और दरगुज़र कर देते".

आज हम सब अपने दिलों का जाय्ज़ा लें के हमारे दिलों में दूसरों के बारे में कैसे गुमान हैं? क्यों कि जब तक दिल साफ़ नहीं होंगे दिलों के अंदर दूसरों की ख़ैर ख़्वाही आ नहीं सकती,जब तक ख़ैर ख़्वाही ना हो दिलों में मुहब्बत नहीं हो सकती और जब तक एक दूसरे से मुहब्बत ना हो उस वक़्त तक ना घर में मुआमलात ठीक हो सकते हैं और ना घर से बाहर के मुआमलात में इसलाह मुम्किन है.

हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है:

كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ اَحْسَنَ النَّاسِ خُلُقًا

(صحيح مسلم)

रसूल अल्लाह ﷺ लोगों में सब से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ के हामिल थे.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अज़वाज मुताहरात से बरताव

- अज़वाज के साथ बहुत ही अच्छा बरताव था,खुश ख़लक़ी से पेश आते. आपﷺ ने फ़रमाया:

خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهِ وَاَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِى

"तुम में बहतरीन वो है जो अपने घर वालों के लिए अच्छा है और मैं तुम में सब से बढ़कर अपने घर वालों के लिए अच्छा हूं".

- हज़रत आइशाرضي الله عنه को आइश कह कर पुकारते,एक जगह खाना खाते,एक बरतन से ग़ुसल कर लेते,उनकी गोद में टेक लगाते और क़ुरआन पढ़ते.
- हज़रत आइशाرضي الله عنه के साथ दौड़ का मुक़ाबला किया तो एक बार वह आगे निकल गईं,दूसरी बार आप ﷺउनसे आगे निकल गए.
- अज़वाज मुताहरात के साथ अदल व इंसाफ़ का मुआमला करते. सफ़र पर ले जाने के लिए इन के दर्मियान क़ुर्रा डालते.

हज़रत असवदرضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने
हज़रत आइशाرضي الله عنه से पूछा:

مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي اَهْلِهِ ؟ قَالَتْ: كَانَ فِي مَهْنَةِ اَهْلِهِ، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ (صحيح البخاری)

नबीﷺ अपने घर वालों के दर्मियान क्या, किया करते थे? उन्होंने फ़रमाया: अपने घर में काम करते जब नमाज़ का वक़्त आता तो उठ जाते थे.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# बच्चों से ताल्लुक़

- बच्चों के साथ इन्तिहाई शफ़क़्क़त से पेश आते.उनके पास से गुज़रते . तो ख़ुद सलाम करते
- फ़ातमाرضي الله عنه आतीं तो उनका हाथ और माथा चूमते फिर खास जगह पर बिठाते.
- हज़रत हसनرضي الله عنه बिन अलीرضي الله عنه के लिए अपनी ज़बान निकालते तो वो आपرضي الله عنه को देख कर मुस्कुराते यानी बच्चों के साथ बच्चों की सतह पर मुआमला करते.
- हसनرضي الله عنه को उठा कर कहते "मैं इस से मुहब्बत करता हूं,तुम लोग भी इस से मुहब्बत करो".

كَانَ يُصَلِّي وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ يَلْعَبَانِ

"आप ﷺ नमाज़ पढ़ रहे होते और हसनرضي الله عنه और हुसैनرضي الله عنه खेल रहे होते. आपﷺ की पीठ पर सवार हो जाते"

كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ

"उमामा رضي الله عنه जो आपﷺ की नवासी थीं आपﷺ के कंधे पर होतीं और आपﷺ नमाज़ पढ़ा रहे होते".

आज अगर नमाज़ पढ़ते वक़्त मां के पास बच्चा रो रहा हो तो उसे खींचकर मां से दूर कर दिया जाता है हालांकि मां बच्चे को उठाकर भी नमाज़ पढ़ सकती है.

- बच्चों से मुहब्बत और लाड प्यार करते.हज़रत ज़ैनबرضي الله عنه जो हज़रत उम्मे ज़ैनबرضي الله عنه की बेटी थीं,आप ﷺ उनको ज़ुवैनब ,ज़ुवैनब कह कर पुकारते.
- महमूद बिन रबीرضي الله عنه कहते हैं के आपﷺ हमारे घर तशरीफ़ लाए,मैं उस वक़्त पांच साल का था,आपﷺ ने हमारे कुएँ से पानी का घूंट भरा और मेरे चेहरे पर फुवार डाली यानी बच्चों के साथ दिल्लगी भी करते

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# साथियों से ताल्लुक़

- फ़जर की नमाज़ के बाद मस्जिद में साथियों के बीच बैठ जाते,उनकी बातें सुनते,कोई ख़्वाब सुनाता तो मतलब बयान करते.
- शेर भी सुनते,इस पर इनाम भी देते.
- ग़नीमत या सदक़ा बांटते.
- तोहफ़ा क़ुबूल करते और बदले में भी देते थे.
- ख़ुशबू बहुत पसंद थी इसलिए ख़ुश्बू का तोहफ़ा कभी ना लोटाते.
- अच्छे नाम पसंद करते और बुरे नाम बदल देते.
- साथियों के नाम प्यार से भी लेते.
- हज़रत अली رضي الله عنه को एक बार कहा يَا اَبَا تُرَاب "ए मिट्टी वाले"
- हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से कहते يَا اَبَاهِرّ "ए बिल्ली वाले".
- हज़रत अनस رضي الله عنه से कहते يَاذَاالْاُذُنَيْن "ए दो कानों वाले"

इस से पता चलता है के लोगों के साथ आप رضي الله عنه का मुआमला उनकी सतह पर और उनके मिज़ाज के मुताबिक़ हो ता जो उनके लिए ख़ुशी का बाइस होता.

- मेहमान भी बने,मेज़बानी भी की,महमानों की ख़ातिरदारी और तवाज़ो ख़ूब फ़रमाते,ख़ुद भी इनकी ख़िदमत करते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मेहमान नवाज़ी में कभी ऐसा भी होता के घर में मौजूद सब ख़ुराक उनकी नज़र हो जाती और घर वाले फ़ाक़ा करते.
दावत भी क़ुबूल करते,अगर कोई ग़ुलाम जो की रोटी की दावत करता तो दावत कुबूल करते और फ़रमाते अगर मुझे एक खुर या दसती पर खाने की दावत दी जाए तो वह भी कुबूल करूंगा.

- लोगों की हिदायत के लिए तड़पते.
- आपﷺ फ़रमाते **يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا** "आसानी किया करो,मुशकिल पैदा ना करो".
- **بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا** ख़ुश्ख़बरियां दिया करो और नफ़रत ना दिलाया करो".
- दो बातों में इख़्तियार होता तो आसान को इख़्तियार फ़रमाते शर्त ये के गुनाह ना हो.
- आप ﷺ ने कभी किसी पर हाथ नहीं उठाया ना किसी का अपमान किया,ना कभी किसी का दिल तोड़ा.
- **لاَ يُدْفَعُ عَنْهُ النَّاسُ** "लोगों को आप ﷺ से हटाया नहीं जाता था". आप ﷺ के लिए हटो बचो की आवाज़ें नहीं आती थीं.
- **وَلَا يُضْرَبُوا عَنْهُ** "और ना लोगों को आप ﷺ से मार मार कर धुत्कारा जाता."
- किसी मुहिम पर लोगों को रवाना करते हुए अमीर कारवां को दुआ देते और नसीहत करते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मिस्कीनों के साथ

- मुसीबत ज़दों के काम आते.
- यतीमों की सरपरसती करते.

  क़र्ज़ दारों का क़र्ज़ उतारने में मदद करते.
- ग़ुलामों के साथ हुसने सुलूक करते,उन्हें आज़ाद करते और आज़ाद करने की ताकीद फ़रमाते.
- मिस्कीनों और बेकसों के साथ इस तरह बैठते के **आप** ﷺ को कोई पहचान ना सकता.
- बेवाओं और मिस्कीनों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए उनके साथ जाते.
- मामूली लौंडी अपने मसलों के लिए **आप** ﷺ का हाथ पकड़ कर जहां चाहती ले जाती.

# साइलों के साथ

- साइलों के साथ मुआमला बहुत मुश्फ़िक/दयालू था.

**وَ اِذَا اَتَاهُ السَّائِلُ اَوْصَاحِبُ الْحَاجَةِ...**

जब कोई मांगने वाला या ज़रूरत मंद **आप** ﷺ के पास आता तो साथियों को नेकी में शरीक करते और फ़रमाते इसके लिए सिफ़ारिश करो.

- लोगों के ग़म में शरीक रहते.

**كَانَ يَأْتِيْ ضُعَفَآءَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ يَزُوْرُهُمْ وَيَعُوْدُ مَرْضَاهُمْ وَيَشْهَدُ جَنَائِزَهُمْ**

- कमज़ोर मुसलमानों की ज़ियारत करते,उनकी अयादत के लिए जाते,उन के लिए दुआ फ़रमाते और उनका जनाज़ा पढ़ते.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# जानवरों के साथ

- जानवरों पर ख़ास रेहमत व शफ़क़्क़त फ़रमाते.

एक सफ़र के दौरान एक सहाबी ने चिड़ियों के बच्चे पकड़ लिए जिस पर चिड़ियां शोर मचाने लगीं तो उन्हें बच्चे वापस घोंसले में रखने का हुक्म दिया.

एक ऊंट आप ﷺ को देख कर मालिक की ज़ियादती की शिकायत बिलबिलाने के अंदाज़ में करने लगा तो आप ﷺ ने उसके मालिक को तंबीह(चेतावनी)करते हुए अल्लाह से डरने की हिदायत फ़रमाई.

# दरख़्तों के साथ

दरख़्तों को बिला वजह ना काटने और खेतियां ख़राब करने से मना फ़रमाते जंगी कार्रवाई के दौरान भी सिर्फ़ उन दरख़्तों को काटने की इजाज़त होती जिनका काटना ज़रूरी होता.

गोया तमाम मख़्लूक़ात के साथ आप ﷺ का मुआमला मिसाली था.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अगर हम चाहते हैं के हम बामक़्सद इंसान बनें और उम्मते मुस्लिमा की हालत बदले तो सबसे पहले हमें अपने आपको बदलना होगा और अपनी ज़ात से शुरू करना होगा.हमारा तर्ज़े अमल और रहन सहन,बात करने का तरीक़ा,मुआमलात व बरताव,घरेलू और बाहरी ज़िंदगी अख़्लाक़ी व माशरती ज़िंदगी,सियासी और बैनुल अक़्वामी मुआमलात जब तक ﷺ के तरीक़े के मुताबिक़ ना होंगें हम इस कामयाबी को नहीं पहुंच सकते जिस तक आप ﷺ और आप ﷺ के सहाबा किराम رضي الله عنه पहुंचे थे.उन्होंने चंद सालों में दुनिया का नक़्शा बदल डाला था.ये सब कैसे हुआ? जब उन्होंने दीन पर अमल की शुरुआत अपनी ज़ात से की और फिर उसे दूसरों तक ले गए.अल्लाह ताला हम सबको भी अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन.

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अमल से ज़िंदगी बनती है जन्नत भी ,जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में ना नूरी है ना नारी.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# مصادر

1.صَحِيُحُ الُبُخَارِى، محمد بن اسماعيل البخاري ، دارالسّلام پبلشرز

2.صَحِيُح مُسُلِمٍ ، مسلم بن الحجاج النيسابوري ، دارالسّلام پبلشرز

3.سُنَنُ النَّسَائِى، أحمد بن شعيب بن على النسائى، دارالسّلام پبلشرز

4.جَامِعُ التِرمذى، محمد بن عيسى الترمذى، دارالسّلام پبلشرز

5.سُنَنُ ابُنِ مَاجَه، محمد بن يزيد ابن ماجه القزوينى،دارالسّلام پبلشرز

6.سُنَنُ اَبِىُ دَاوُدَ، سليمان بن الأشعث السجستاني ، دارالسّلام پبلشرز

7.مُسُنَدُ الاِمَامِ أَحُمَد بن حنبل،احمد بن حنبل الشيباني،مؤسسة الرسالة

8.سلسلة الاحاديث الصَّحيحة، محمد ناصر الدين الالبانى، مكتبة المعارف

9.شرح صحيح الأدب المفرد، محمد بن اسماعيل البخاري، تخريج محمد ناصر الدين الالبانى، المكتبة الاسلامية ،دار ابن حزم

10.المستدرک على الصحيحين، محمد بن عبد اللّٰه الحاكم النيسابورى، دارالمعرفة بيروت

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

محمد رسول الله

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.

٠٤٠١٠١٢٦